शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

तकनीक से भाषायी बंधन टूटने की ओर

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

आज जबकि हिन्दी भाषा का राष्ट्रीय एकता में महत्व सिद्ध हो गया है, तब भी अनेक महानुभाव इससे असहमति जताते हुए अनेक प्रकार के तर्क देते हैं। ऐसे तर्कवीरों को न तो देश की परिस्थिति का ज्ञान है और न ही दुनिया के प्रवाह को देखने की दृष्टि है। स्वयं को वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न बताकर अंग्रेजी का पक्ष लेते हुए हिन्दी भाषा को अध्ययन-अध्यापन से बेदखल करने तक पहुंच जाते हैं। उनका तर्क यही है कि 10वीं कक्षा तक विद्यार्थी इतनी हिन्दी सीख जाता है कि वह स्वयं को ठीक तरह से अभिव्यक्त कर सके, जबकि अंग्रेजी भाषा सीखने और व्यवहार करने में और अधिक वर्ष खर्च करने की जरूरत है। आमतौर पर हिन्दी के पक्षधर को अंग्रेजी का विरोधी मानकर व्यवहार किया जाता है। साक्षरता बढ़ने और तकनीक के विकास से अंग्रेजी भाषा का भ्रम जाल तेजी से टूट रहा है। आज से पहले अंग्रेजी भाषा के सामने नतमस्तक होकर सब कुछ स्वीकार करने के अलावा कोई चारा नहीं था, परंतु कृत्रिम बुद्धिमता तकनीक ने इसमें सेंध लगा दी है। व्यक्ति जिस भाषा में ज्ञान और जानकारी प्राप्त करना चाहता है, उसे वह सुविधा उपलब्ध हो गई है। दुन्या में उपलब्ध श्रेष्ठ ज्ञान को अपनी भाषा में हासिल करना पहले दुष्कर कार्य हुआ करता था। हथेली में समायी हुई दुनिया के सामने प्रश्न उपस्थित करने की देर है, पलक झपकते आपके पास आपकी भाषा में उत्तर प्राप्त हो जाता है। इसके बाद भी एक प्रश्न अनुत्तरित रह जाता है। वह है भाषा में प्रयुक्त औचित्पूर्ण शब्दावली का। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पास देश, काल, परिस्थिति का ज्ञान नहीं है, बल्कि उसके पास वैज्ञानिक दृष्टि है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक से विज्ञान विषयों को समझ में आने लायक भाषा में रूपांतरित किया जा रहा है, परंतु विज्ञान से इतर विषयों के लिए यह तकनीक अधूरी सिद्ध हो रही है। वह देशों की सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक परिस्थिति से अनभिज्ञ है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्राप्त सामग्री को उचित शब्दावली में ढालने के लिए भाषा का समुचित ज्ञान होना ही चाहिए। शब्द की साधना को किसी कक्षा विशेष में अध्ययन-अध्यापन तक सीमित नहीं किया जा सकता। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अंग्रेजी भाषा को विदेशी भाषा का दर्जा दिया गया है। इसका एक भाषा के रूप में अध्ययन-अध्यापन ठीक है, परंतु इसे सभी विषयों के अध्ययन-अध्यापन का माध्यम बनाने से शिक्षाविदों ने शुरू से असहमति जाहिर की है। आज तकनीक के विकास ने इस असहमति के स्वर को मुखर कर दिया है। इससे अंग्रेजी भाषा के पक्षधर बेचैन हो गए हैं। आज जब उपभोक्ता वस्तुओं को खरीददार की भाषा में प्रस्तुत किया जा रहा है, तब ज्ञान को केवल अंग्रेजी भाषा तक सीमित क्यों रखा जाए ? विज्ञान एवं तकनीक अभिव्यक्ति के माध्यम को चुनने की आजादी की ओर तेजी से अग्रसर है जबकि अंग्रेजी के मोह से ग्रस्त व्यक्तियों को अपना एकछत्र साम्राज्य ढहता नजर आ रहा है। अपनी भाषा का गौरव करने वाले भाषाप्रेमियों के लिए विज्ञान और तकनीक ने स्वर्णिम अवसर उपलब्ध कराया है। भारतेंदु यह पंक्ति 'निज भाषा अहै उन्नति को सब मूल' साकार होने वाली है। अंग्रेजी भाषा के आतंक से मुक्ति सन्निकट है।